संक्षेप(एब्सट्रेक्ट)

गांधी ने हिन्द स्वराज में नीति, नीति की शिक्षा, नीति शिक्षा, को सर्वप्रथम व सबसे उत्तम शिक्षा व मानव हेतु परम आवश्यक शिक्षा कहा था। उक्त नीति, नीति की शिक्षा व नीति शिक्षा के बारे में वर्णन नहीं था। गांधी ने अपने अनुयायियों को पत्रों द्वारा स्वयं जेल में रहते हुए शिक्षा दी थी और वो भी अक्षर ज्ञान की शिक्षा या विज्ञान या कला आदि विशिष्ट विषय की शिक्षा नहीं थी। इन शिक्षाओं का जिक्र मंगल प्रभात नामक पुस्तक में दिया हुआ है। इन शिक्षाओं व हिन्द स्वराज में वर्णित शिक्षाओं के साथ सम्बन्ध दिखता है। इस शोध का उद्देश्य गुणात्मक व दार्शनिक शोध विधियों का प्रयोग करते हुए बारह शोध–प्रश्नों के माध्यम से 'हिन्द स्वराज' के शिक्षा अध्याय व मंगल प्रभात के परिप्रेक्ष्य में नीति शिक्षा की संकल्पना व उसका समाधान ज्ञात करना है। इन शोध–प्रश्नों में सबसे पहला प्रश्न है, नीति शिक्षा का अर्थ क्या है। नीतियों का अर्थ क्या है; इसका एक अन्य प्रश्न है। साथ ही नीति शिक्षा किसको और कब दी जाये और शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को नीति शिक्षा देनी चाहिये या नहीं, भी शोध प्रश्न हैं। नीति शिक्षा का गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, हिंसा व आतंकवाद, वैश्वीकरण तथा विज्ञान व तकनीकी विकास आदि पर प्रभाव से सम्बन्धित छः (6) शोध–प्रश्न भी उक्त शोध प्रश्नों में निहित हैं।

गांधी की दृष्टि से नीति से आशय है,सत्य/प्रकृति/सृष्टि को पहचानना, जानना; सत्य/प्रकृति का आदर करना; हर क्षण सत्य की प्राप्ति की ओर चलते रहना/बढ़ते रहना। सत्य ही ईश्वर है इसको खुदा आदि अनेक नामों से अपनी–अपनी श्रद्धा से पुकारा जा सकता है। गांधी ने सत्य/प्रकृति/सृष्टि को; जिसके भाव में इसको बनाने वाला तथा चलाने वाला भी शामिल है; ईश्वर शब्द से संबोधित किया है। इस सत्य की संताने प्रकृति में समाए सभी जीव–निर्जीव हैं, और सभी का सहअस्तित्व है। सभी का दायित्व व कर्त्वय है कि प्रकृति के साथ उसके स्वभाव के अनुसार ही व्यवहार करें। प्रकृति सबकी जननी है, और प्रकृति इसके द्वारा उत्पन्न किए गए सभी लोगों से बराबर व पूरा प्रेम करती है; सभी को समान समझ कर व्यवहार करती है; सभी के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार करती है; और सभी में से उनको (जो प्रकृति के अनुकूल नहीं चलते/व्यवहार करते हैं) अपने किए का फल भोगने के लिए छोड़ देती है; प्रकृति सभी को दिखती है, चाहे व्यक्ति जमीन/आकाश/जमीन के अंदर किसी भी कोने में रहे। इसलिए प्रकृति सत्य है। सभी को यह भी मालूम है कि जो जैसा करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। यह भी सभी को ज्ञात है कि सदियों के इंद्रिय–आधारित वैज्ञानिक व तकनीकी खोजों के बावजूद भी सृष्टि/सत्य/ईश्वर पर आज तक कोई भी अधिकार प्राप्त नहीं कर सका है, उसको अपने वश में नहीं कर पाया है। इसलिए नीति यह है कि उक्त सत्य को जाने; पहचाने; उसका आदर करें; उसके नियमों के अनुसार प्रकृति में विद्यमान समस्त जीव–निर्जीव से प्रकृति की संतान की तरह और खुद के जनक की संतानों की तरह सब का आदर करते हुए, संधारण

करते हुए जिये। प्रकृति के अनुकूल व्यवहार करने के गांधी ने ग्यारह नियम बताए हैं। इन नियमों को नीति नियम कहते हैं। यह ग्यारह नियम हैंः–अहिंसा (सर्वश्रेष्ठ व सर्वप्रथम है, जिसके अनुपालन करने से अन्य दस नियमों में से अनेक की खुद–ब–खुद अनुपालना होने लगती है), ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अछूतपन मिटाना, शारीरिक श्रम से ही प्राप्त वस्तुओं से जीवन चलाना, नम्रता, स्वदेशी तथा सर्वधर्म–समभाव। अहिंसा का अर्थ यह है कि सृष्टि के सभी अवयवों से हमेशा ही पूरा–का–पूरा प्रेम करते रहना। सत्य की ओर, अर्थात्, ब्रह्म की ओर निरंतर बढ़ते रहने के नियम को ब्रह्मचर्य कहा है। किसी भी वस्तु का भोग की दृष्टि से उपयोग नहीं करने के नियम को अस्वाद कहा है। किसी भी वस्तु या विचार का– भले ही इसका कोई मालिक हो या न हो और भले ही उसको उसके मालिक के इजाजत से लें या बिना इजाजत के लें – जोकि अपने शरीर व उसमे निहित सूक्ष्म तत्वों के प्राकृतिक रूप से बनाए रखने के लिए परम आवश्यक न हो, को नहीं लेना या नहीं लेना का विचार करना ही अस्तेय नामक नीति नियम है। शरीर व इसके अन्दर मौजूद अवयवों को प्रकृति के रूप में बनाए रखने के लिए परम आवश्यक वस्तु/व्यक्ति/विचार के अतिरिक्त अन्य को संग्रह नहीं करने के नीति नियम को अपरिग्रह कहा है। काम, क्रोध, द्वेष आदि का, शरीर का, मृत्यु का, बेइज्जती का, संपत्ति का, धन का, मित्र–परिवार–संतान आदि का, किसी भी चीज का भय न रखने के नीति नियम को अभय कहते हैं। सृष्टि के समस्त अवयवों में से किसी एक से भी भेदभाव की भावना न रखना और भेदभाव न करना और उन सभी से पूरा–का–पूरा प्रेम करने के नीति नियम को अछूतपन मिटाना कहते हैं। शारीरिक श्रम करके जो प्राप्त हो सिर्फ उसी से अपना जीवन चलाने के नीति नियम को जात–मेहनत या शारीरिक–मेहनत या ब्रेडलेबर कहा है।"मैं" और "मेरा","मेरे" पन उत्पन्न नहीं होने देने के नियम को नम्रता कहते हैं। अपने शरीर को ही नहीं बल्कि उसके अंदर विद्यमान अन्य तत्वों को सत्य/ईश्वर का अंश समझते हुए सृष्टि के सभी अवयवों को अपना समझने के नियम को स्वदेश कहा है। अपने धर्मों के अतिरिक्त अन्य समस्त धर्मों को भी मानव–निर्मित व गुण–दोष युक्त समझ कर एक दूसरे की अच्छाइयाँ ग्रहण कर स्वयं के धर्म की उन्नति करते रहने व समस्त धर्मों को समान समझने के नीति नियम को सर्वधर्म–समभाव नाम से संबोधित किया है।उक्त सत्य/सृष्टि/प्रकृति की और इस के नियमों की पालना की जानकारी देने और उन नियमों की अनुपालना करने में बच्चों व सभी को अभ्यस्त बनाने– विशेषतःमानव बच्चे पैदा होने के तुरंत बाद से शुरुआत करके– को नीति शिक्षा कहा है। निसंदेह इससे मानव का शारीरिक, बौद्धिक आध्यात्मिक व नैतिक अंतर्निहित शक्तियों का विकास संतुलित, सर्वश्रेष्ठरुप से व समन्वित होता है। नीति शिक्षा और धर्म शिक्षा एक ही नहीं है। गांधी ने नीति शिक्षा को धर्म शिक्षा से बड़ा माना है क्योंकि मानव निर्मित सभी धर्मों में कमियां होना स्वाभाविक है, किंतु नीति और नीति नियम सत्य हैं; वे प्रकृति/ईश्वर के नियम हैं;वे दोषमुक्त हैं;वे सार्वकालिक व सर्वव्यापक हैं; और सभी धर्मों में कमो–बेश निहित हैं। अतः गांधी ने नीति

ही धर्म है कहा है; यहाँ धर्म से गांधी का आशय कर्तव्य से है। गांधी ने अपने नीतिशिक्षा/नीतिधर्म/धर्मनीति की शिक्षा को किसी सांप्रदायिक धर्म की शिक्षा नहीं कहा है; सभी सांप्रदायिक धर्मों के प्रति सर्वधर्म–समभाव के लिए ही गांधी ने कहा है। नीति शिक्षा समस्त आयु वर्ग के लोगों को सर्वप्रथम–शिक्षा–के–रूप में प्राप्त करना अनिवार्य है; किंतु क्योंकि बच्चे जन्म से कोरी स्लेट होते हैं इसलिए हर बच्चे को नीति शिक्षा देना परम आवश्यक है। यह नीति शिक्षा को किसी भी प्रकार की शिक्षा;अर्थात्, औपचारिक, अनौपचारिक, अनौपचारिकेत्तर शिक्षा– के साथ दिया जा सकता है। किंतु चाहे माध्यमिक शिक्षा हो या उच्च शिक्षा हो, इनका कोई मूल्य और महत्व नहीं है यदि व्यक्ति नीति शिक्षा प्राप्त नहीं है; इस नीति की/सत्य की/प्रकृति की/ सृष्टि की/सहअस्तित्व की/संतुलन की/समन्वय की समझनहीं रखता है; इनको नहीं मानता है; और नीति नियमों के अनुसार अनुपालना में अभ्यस्त नहीं है। इस नीति शिक्षा के लिए नीति की समझ रखने वाले और नीति नियमों के अनुपालना में अभ्यस्त लोग ही नीति शिक्षा देने के लिए (शिक्षक) जरूरी हैं। ऐसे शिक्षक तैयार करने होंगे और शिक्षकों को प्रशिक्षित करना होगा। नीति शिक्षा दिए जाने के बाद जो संसार होगा उसमें न तो बेरोजगारी होगी, न गरीबी होगी (उल्टे वर्तमान गरीबी व बेरोजगारी खत्म होगी); नही भ्रष्टाचार होगा (उल्टे वर्तमान भ्रष्टाचार खत्म होगा); न ही हिंसा व आतंकवाद होगें (उल्टे वर्तमान हिंसा व आतंकवाद खत्म होगें); न ही आर्थिक वैश्वीकरण में बाधा होगी; और न ही वैज्ञानिक व तकनीकी विकास में बाधा होगी। सकल राष्ट्रीय खुशहाली (जी.एन.पी.) नीति व नीति शिक्षा का पर्याय नहीं है।